होली खेलनी ए अज तेरे नाल सालासर रैहन वालया

तर्ज:- नी मैं नचना मोहन दे नाल

होली खेलनी ए अज तेरे नाल,
सालासर रैहन वालया ॥

गिन गिन सावन, कई फाग बिताए ।
हर वार बाला जी बेरंग घर आए ।
तुसां पुछथा असां दा न हाल - सालासर...

जग दे रंगां नूं की करना ए बाला ।
असां तां तेरे रंग रंगना ए बाला ॥
सानूं करदे माला-माल - सालासर...

खोल दे बाला अज रंग दी तिजोरी ।
खूब मचादे सालासर विच होरी ॥
सबै हो जान लालो लाल - सालासर...

अंग अंग रंग साडा मार पिचकारी ।
रंग दे 'मधुप' अज दुनिया ए सारी ॥
रोम रोम साडा करदे निहाल - सालासर...

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33375/title/Holi-khelni-hai-ajj-tere-naal-salasar-rehan-waleya

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |